पाठ-10

अमीर खुसरो

● **संकलित**

आइए, सीखें : अमीर खुसरो का साहित्यकार के रूप में परिचय व उनकी समन्वयवादी भावना का ज्ञान।

''परमात्मा जब मुझसे पूछेगा कि तुम मेरे लिए क्या लाए हो, तो मैं खुसरों को पेश कर दूँगा।'' ये उद्‌गार प्रसिद्ध संत हजरत निजामुद्दीन औलिया के अपने शिष्य के प्रति थे। गुरु कहा करते थे – ''अगर कब्र में दो लोगों को दफन किया जाता, तो मैं चाहता कि खुसरो को मेरे साथ ही दफन किया जाए।'' ऐसी आत्मीय गुरु कृपा के पात्र थे अमीर खुसरो।

अमीर खुसरो का परिवार तुर्की देश से आकर भारत में बसा था। इनका जन्म ई. सन्‌1253 में दिल्ली के पास पटियाली ग्राम में हुआ था। इनके बचपन का नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन था। ये बचपन से ही विवेकशील थे। साथ ही स्वभाव से अत्यंत सुशील, कुशाग्र व मेधावी थे।

खुसरो के पिता एक जागीरदार थे। उनका कई दरबारों से संपर्क था। वे अनेक बादशाहों के विश्वास पात्र थे। पिता की मृत्यु के बाद खुसरो अपने नाना के घर दिल्ली आ गए। यहीं वे अपने गुरु के संपर्क में आए। उनके गुरु निजामुद्दीन औलिया एक सूफी संत थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर को अलौकिक प्रेम से ही प्राप्त किया जा सकता है। खुसरो भी इसी मत के अनुयायी बन गए। इनकी आध्यात्मिक रूचि, व्यवहार व रचना प्रवृत्ति को देखकर गुरु को बड़ा गर्व होता था।

खुसरो ने लोक भाषा में काव्य रचा। यही लोक भाषा आगे चलकर साहित्यिक उर्दू के रूप में विकसित हुई। उनके काव्य की सरलता ने लोगों को प्रभावित किया। उन्होंने रहस्य भरी मनोरंजक बातें पहेलियों के द्वारा प्रस्तुत की। एक बानगी पढ़िए –

एक नार ने अचरज किया। साँप मार पिंजरे में दिया।।
ज्यों-ज्यों साँप ताल को खाय। सूखे ताल साँप मरि जाय।।
(दीपक, बाती, तेल-पहेली के रूप में)

मुकरियों में उन्होंने एक वस्तु की बात करते हुए मुकरकर दूसरी वस्तु को बताने का अनूठा प्रयोग किया। ऐसी ही उनकी एक मुकरी पढ़िए-

वह आवे तो शादी होय, उस बिन दूजा और न कोय।
मीठे लागे वाके बोल, क्यों सखि साजन, ना सखि ढोल।।

शिक्षण संकेत –
♦ कोई पहेली पूछते हुए या अमीर खुसरो की कोई पहेली पूछते हुए पाठ का आरंभ करें। ♦ पाठ का शुद्‌ध उच्चारण करें तथा बच्चों के उच्चारण पर ध्यान दें। ♦ गुरु शिष्य के प्रेमपूर्ण संबंधों की चर्चा करें। ♦ नए शब्द के अर्थ बताने में बच्चों की सहायता लीजिए ।

उन्होंने मन को छू लेने वाले गीत भी लिखे जिनमें बसंत-गीत व बाबुल-गीत प्रसिद्ध हैं।

अमीर खुसरो पर भारतीय संस्कारों का बहुत प्रभाव था। ननिहाल के वातावरण से उन्होंने धार्मिक समन्वय सीखा। वे एक महान संत-कवि, दरबारी व दार्शनिक थे। उन्होंने वेदान्त, बौद्ध व इस्लाम दर्शन को अपनी रचनाओं में सहज रूप से समाहित किया था। खुसरो के काव्य में मधुरता व कसक रहती थी। जो भी उनकी वाणी सुनता, वह झूम उठता था।

खुसरो ने अपनी रचनाओं में भारत की जलवायु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों, धर्म व भाषाओं की महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। अपने काव्य में उन्होंने भारत की खूब प्रशंसा की है। खुसरो ने लिखा है - ''यह मेरा वतन है, मेरी भारत माता है।'' उनका जीवन धर्म निरपेक्षता, देशप्रेम व इंसानी बराबरी का एक अच्छा उदाहरण है। तभी तो उनकी शिक्षाएँ लागों को जोड़ती हैं, तोड़ती नहीं। वे हमें एक सच्चे हिन्दुस्तानी की तरह रहना सिखाती हैं।

अपने गुरू के प्रति खुसरो का समर्पण-भाव अत्यंत प्रेरक है। एक बार वे किसी काम से दिल्ली से बाहर गए हुए थे। वहाँ उन्हें समाचार मिला कि हजरत निजामुद्दीन औलिया का निधन हो गया। अचानक इस अनहोनी को सुन वे सकते में आ गए तथा तत्काल ही दिल्ली की ओर चल पड़े। जब वे गुरु के अंतिम दर्शन हेतु पहुँचे तो आँखों से अश्रुधारा बह रही थी, दिल बड़ा दु:खी था। उसी दशा में उन्होंने कहा-

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।

यह उनकी अंतिम रचना थी। इसके बाद उन्हें वैराग्य हो गया। उनका काव्य आज भी चाव से पढ़ा और सुना जाता है।

नए शब्द -

उद्‌गार = विचार। **अलौकिक** = अद्‌भुत, अपूर्व । **अनुयायी** = पीछे चलने वाला, किसी मत को मानने वाला। **आध्यात्मिक** = अध्यात्म से संबंधित, आत्मा से संबंधित । **वैराग्य** = विरिक्त, संसार से उदासीनता ।

■ **यह भी जानिए-**

मुकरी- 'मुकरी' शब्द मुकरना से बना है। मुकरना का अर्थ है- कहकर बदल जाना या वादा करके बाद में कही गई बात से इनकार करना। मुकरी ऐसी पद्य रचना है जिसमें 'हाँ' कहकर 'न' कहा जाता है। जैसे इस पाठ की मुकरी में

'वह आवे तो शादी होय, उस बिन दूजा ओर न कोय।
मीठे लागे वाके बोल, क्यों सखि साजन, ना सखि ढोल।। '

ऐसा लगता है जैसे सखि के साजन आ रहे हैं, कन्तु कवि उसे साजन मानने से इनकार करता है और कहता है 'साजन नहीं' ढोल आ रहा है।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(क) सही जोड़ी बनाइए–

(अ)	(ब)
अमीर खुसरो के बचपन का नाम	बसन्त गीत
निजमुद्दीन औलिया	मुख पर डारे केस
ननिहाल का वातावरण	सूफी संत
लोकगीत	अबुल हसन यमीनुद्दीन
गोरी सोवे सेज पर	धार्मिक समन्वय

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(अ) खुसरो के पिता ..... थे। (मालदार, जागीरदार)

(ब) अमीर खुसरो पर ..... संस्कारों का प्रभाव था। (विदेशी, भारतीय)

(स) पिता की मृत्यु के बाद खुसरो अपने ..... के घर आकर रहने लगे। (नाना,दादा)

(द) खुसरो ने ..... में काव्य रचा। (मातृभाषा, लोकभाषा)

(ई.) अमीर खुसरो का परिवार ..... देश से आकर भारत में बसा था (तुर्की,पुर्त्तगाल)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) अमीर खुसरो का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ब) खुसरो के गुरू कौन थे?

(स) अमीर खुसरो के मन को छूने वाले गीत कौन से हैं?

(द) अमीर खुसरो को वैराग्य कब हुआ?

(ई) सूफी मत के अनुसार ईश्वर प्राप्ति का क्या मार्ग है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) खुसरों की कृतियाँ हमें क्या शिक्षा देती हैं?

(ब) भारत देश की प्रशंसा अमीर खुसरो किस रूप में करते हैं?

(स) खुसरो की रचानाओं में कौन–कौन से दर्शन समाहित हैं?

(द) 'मुकरी' का उदाहरण देते हुए उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ई) खुसरो की अंतिम रचना कौन सी थी, वह किस घटना से संबंधित थी?

भाषा की बात-

(1) बोलिए और लिखिए-

आत्मीय, कुशाग्र, साहित्यिक, समन्वय, धर्मनिरपेक्षता, अश्रुधारा, वैराग्य।

(2) नीचे दिए शब्दों की वर्तनी सुधारिए-

प्रसतुत, गुरू क्रपा, ननीहाल, जलवायू, अनुयाई

■ **ध्यान दीजिए-**

खुसरो ने लिखा है- ''यह मेरा वतन है, मेरी भारत माता है।'' उनका जीवन धर्मनिरपेक्षता, देशप्रेम व इंसानी बराबरी का एक अच्छा उदाहरण है। उनकी शिक्षाएँ लोगों को जोड़ती हैं, तोड़ती नहीं।

ऊपर दिए अवतरण में (‘‘ ’’) चिह्न अमीर खुसरों की विशेष उक्ति के लिए लगाया गया है। वाक्य समाप्त होने पर पूर्ण विराम (।) का प्रयोग किया गया है और जहाँ थोड़ा ठहराव है, वहाँ अल्प विराम (,) का प्रयोग है। वाक्यगत भाव को पूरी तरह समझाने के लिए विशेष स्थानों पर ठहरना पड़ता है। ठहराव की स्थिति को प्रकट करने के लिए विभिन्न विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

3. नीचे दिए वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए-

(क) गांधी जी ने कहा था सदा सत्य बोलो

(ख) राम मोहन सौरभ और कमल घूमने गए

(ग) झूठ बोलना पाप की जड़ है शिक्षक ने कहा

(घ) बाजार से सब्जी ले आए इन्हें डलिया में रख दो

■ **यह भी जानिए -**

गुरूकृपा, देशप्रेम, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे ये शब्द दो शब्दों के मेल से बने हैं। इन शब्दों को अलग करना विग्रह कहलाता है। विग्रह करने पर शब्दों के बीच संबंध तत्व जुड़ जाते हैं। गुरु की कृपा, देश के लिए प्रेम, पशु और पक्षी, पेड़ और पौधे

जब इन शब्दों के बीच के संबंध तत्व हटाकर संक्षिप्त रूप में लिखते हैं तो ये सामासिक शब्द कहलाते हैं।

4. नीचे दिए विग्रह पदों के सामासिक शब्द बनाइए -

(क) बैलों की गाड़ी .....

(ख) राजा की सभा .....

(ग) देश के लिए भक्ति .....

(घ) भाई और बहन .....

5. विलोम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए -

प्रशंसा	-	अरूचि
रूचि	-	घृणा
प्रेम	-	निन्दा
नारी	-	अप्रभावित
प्रभावित	-	पुरुष

6. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों को सही क्रम में लिखिए-

(क) एक जागीरदार थे पिता के खुसरो।

(ख) खुसरो ने काव्य रचा लोकभाषा में।

(ग) अंतिम रचना थी उनकी यह।

(घ) गुरू के सम्पर्क में आए वे यहीं।

(ङ) खुसरो भी मत अनुयायी इसी के बन गए।

अब करने की बारी

- पहेलियों का संग्रह कीजिए और बाल-सभा में पहेली बूझने की प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
- खुसरो तथा अन्य कवियों की पहेलियाँ खोजकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
- अबकी बार बाल-सभा में साहित्यिक अन्त्याक्षरी का आयोजन कीजिए ।